पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित:01.05.2021 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली—110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें या 9958889970 पर Paytm कर दें। — अनिल आर्य

वर्ष-37 अंक-23 बैशाख-2078 दयानन्दाब्द 198 01 मई से 15 मई 2021 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.05.2021, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 211वां वेबिनार सम्पन्न

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम पर गोष्ठी सम्पन्न

अखण्ड आर्यावर्त की स्थापना श्री राम ने की —आर्य रविदेव गुप्ता
श्री राम सदियों तक मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

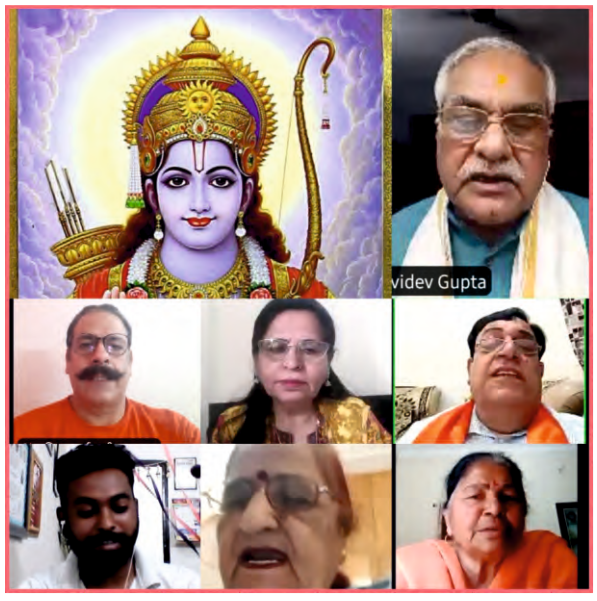

बुधवार 21 अप्रैल 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में श्री राम नवमी पर्व ऑनलाइन जूम पर सोल्लास मनाया गया और श्री राम के जीवन दर्शन पर चर्चा की गई। यह परिषद का कॅरोना काल में 207 वा वेबिनार था। वैदिक विद्वान आर्य रविदेव गुप्ता ने कहा कि श्री राम ने राक्षसों, आंतकवादियों का वध करके शांति की स्थापना की, आज भी अनेको देश द्रोह के स्वर सुनाई देते है जिसका प्रतिउत्तर श्री मोदी जी दे रहे हैं। उन्होंने एक मजबूत आर्यावर्त की स्थापना की तभी आज भी लोग रामराज्य की कल्पना करते हैं। वह एक आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई ,आदर्श मित्र व आदर्श राजा भी रहे उन्होंने अपने जीवन में आदर्श स्थापित किये वह सदियों तक समाज का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि हजारों वर्ष बाद भी उनके याद करना उनके गुणों के कारण ही है, व्यक्ति की यश कीर्ति उसके कार्यो के कारण ही जीवित रहती है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने जीवन मे कुछ मर्यादाओं को तय किया व उनका पालन किया तभी वह समाज मे आदर्श बन पाए। आर्य नेत्री डॉ. सुषमा आर्या ने उनकी 16 गुणों की चर्चा करते हुए उन्हें आत्मसात करने की प्रेरणा दी। उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीन आर्य ने श्री राम जन जन के राम है,उनका जीवन चरित सर्वोत्तम है। अध्यक्ष सोमरत्न आर्य (अजमेर) ने भी श्री राम नवमी की बधाई दी। गायिका ईश्वर देवी,कुसुम भंडारी,नरेश खन्ना, संतोष डावर, प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता, जनक अरोड़ा,वीरेन्द्र आहूजा आदि ने मधुर गीत सुनाये। आचार्य महेंद्र भाई, आनन्द प्रकाश आर्य,राजेश मेंहदीरत्ता, सौरभ गुप्ता,अमरनाथ बत्रा,हरीओम शास्त्री, राजकुमार भंडारी, डॉ विपिन खेड़ा, डॉ रचना चावला आदि उपस्थित थे।

डी ए वी के संस्थापक महात्मा हंसराज जी का जन्मोत्सव सम्पन्न

शिक्षा व सेवा के समन्यवक थे महात्मा हंसराज —आचार्य हरिओम शास्त्री
आर्य समाज व डी ए वी एक दूसरे के पूरक है —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार 19 अप्रैल 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में डी ए वी आंदोलन के प्रणेता व प्रथम अवैतनिक प्रधानाचार्य महात्मा हंसराज जी का 157 वा जन्मोत्सव सोल्लास ऑनलाइन जूम पर मनाया गया । उल्लेखनीय है कि आपका जन्म 19 अप्रैल 1864 को होशियार पुर,पंजाब में हुआ था। यह परिषद का कॅरोना काल मे 206 वा वेबिनार था। मुख्य वक्ता आचार्य हरिओ३म् शास्त्री (फरीदाबाद) ने कहा कि महात्मा हंसराज जी मानसरोवर के राजहंस से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। महात्मा हंसराज जी का संपूर्ण जीवन शिक्षा और सेवा हेतु समर्पित था। वे अपने बड़े भाई लाला मुल्कराज के द्वारा दिए गए अपने वेतन के आधे भाग से परिवार का पालन करते हुए आजीवन आर्य समाज व डी ए वी स्कूल व कालेज की सेवा करते रहे। समस्त देश के शोषित वंचित हिंदू जनों की सेवा करते हुए उन्हें कई बार भयंकर शारीरिक व आर्थिक कष्टों का सामना भी करना पड़ा। एक बार उन्हें क्षयरोग भी हो गया। परन्तु अपने रोग व समस्याओं की परवाह न करते हुए उन्होंने शुद्धि आन्दोलन, वेद प्रचार व डी ए वी स्कूल तथा कालेज की सेवा नहीं छोड़ी। अपने बिछुडे भाई मलकाने राजपूतों जो कभी मुस्लिम शासकों द्वारा तलवार के बल पर मुसलमान बना लिये गये थे, उन्हें शुद्ध कर पुनः हिन्दू धर्म ग्रहण कराने का महान कार्य करते रहे। इसीलिए उनका स्वास्थ्य निरन्तर गिरता गया। अन्त में आर्य समाज के लोगों को वेद प्रचार व डी ए वी का काम सौंपकर ये महामानव महात्मा हंसराज जी 15 नवम्बर 1938 को 74 वर्ष की आयु में अपने स्वामी परमपिता परमात्मा को और गुरु महर्षि दयानंद जी महाराज को नमन करते हुए अपना नश्वर शरीर छोड़ कर ईश्वर की गोद में चले गए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महात्मा हंसराज जहाँ शिक्षा विद थे,साथ ही सेवा विद भी थे वह मानवता के सच्चे उपासक थे, जहाँ भी कहीं प्राकृतिक आपदा आयी वहाँ सेवा करने पहुंच गए । उनके जीवन दर्शन व गुणो को धारण करने की आवश्यकता है। समारोह अध्यक्ष शिवकुमार टुटेजा ने कहा कि ऐसे महामानव अंतराल के बाद जन्म लेते है और उदाहरण बन जाते है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीन आर्य व हिसार से ईश आर्य ने भी उनके पदचिन्हों पर चलने का आह्वान किया। योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने संचालन करते हुए आज के युवाओं को महात्मा जी से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

वैदिक धर्म के पुनरुद्धार में ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का योगदान

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

भारतीय धर्म व संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, आदिकालीन, सर्वोत्कृष्ट, ईश्वरीय ज्ञान वेद और सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों पर आधारित है। सारे विश्व में यही संस्कृति महाभारत काल व उसकी कई शताब्दियों बाद तक भी प्रवृत्त रहने सहित सर्वत्र फलती—फूलती रही है। इस संस्कृति की विशेषता का प्रमुख कारण यह था कि यह ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आधारित होने के साथ वेदों के प्रचारक व रक्षक ईश्वर के साक्षात्कृत धर्मा हमारे ऋषि मुनियों द्वारा प्रचारित व संरक्षित थी। महाभारत के विनाशकारी युद्ध के प्रभाव से ऋषि परम्परा समाप्त हो गई जिससे संसार में धर्म व संस्कृति सहित शिक्षा के क्षेत्र में घोर अन्धकार छा गया। इस विषम परिस्थिति में देश—देशान्तर में वही हुआ जैसा कि नेत्रान्ध व अल्प नेत्र ज्योति वाले अशिक्षित व्यक्तियों के कार्य होते हैं। यह अन्धकार समाप्त नहीं हो रहा था अपितु समय के साथ बढ़ रहा था। इस स्थिति में हम देखते हैं कि देश—देशान्तर में कुछ महापुरुषों का जन्म हुआ जिन्होंने समाज को नई दिशा देने के लिए सामयिक ज्ञान की अपनी योग्यतानुसार अपने—अपने मत व धर्म प्रचलित किये और इन्हीं मत व धर्मों के पालन के लिए उन—उन देशों में, मुख्यतः यूरोप व अरब आदि देशों में, वहां की भौगोलिक एवं समाज के पुरुषों की योग्यता के अनुसार मत व संस्कृति का प्रादुर्भाव व विकास हुआ। भारत तथा विश्व में सृष्टि के आदि काल से लेकर महाभारत काल तक वैदिक धर्म व संस्कृति प्रचलित रही थी। समाज में अज्ञान बढ़ जाने से इसका विपरीत प्रभाव धर्म व संस्कृति दोनों पर हुआ जिस कारण संस्कृति का स्वरुप भी सत्य के विपरीत अज्ञान प्रधान होकर अनेक विकारों से युक्त हुआ।

संस्कृति का अध्ययन करने के लिए हमें धर्म, भाषा, स्वदेश गौरव की भावना, वेषभूषा, परम्परा वा रीति—रिवाजों आदि की स्थिति पर विचार और इसमें महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के योगदान की चर्चा करना उपयुक्त होगा। धर्म के क्षेत्र में भारत सृष्टि के आदि काल से वेद और वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों का पालक रहा है। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण सत्य मान्यताओं, यथार्थ धर्म व संस्कृति के पोषक रहे हैं। हमारे ऋषि—मुनि भी विचार, चिन्तन, ध्यान व मनन द्वारा वेदों के सभी मन्त्रों व शब्दों में निहित मनुष्यों के लिए कल्याणकारी अर्थों व ज्ञान से देश की जनता को उपकृत करते थे जिससे सारा समाज व देश सत्य ज्ञान से युक्त व उन्नत था। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से सभी मनुष्यों व वर्णों की सन्तानों को गुरुकुलीय शिक्षा दी जाती थी जहां निर्धन व धनवानों के लिए वेद—वेदांगों के ज्ञान कराने वाली शिक्षा का सबके लिए समान रूप से निःशुल्क प्रबन्ध था। स्वामी दयानन्द ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा को अनिवार्य करने की बात कही है। कृष्ण व सुदामा एक साथ पढ़ते थे और परस्पर मित्रवत् व्यवहार करते थे। वैदिक काल के सभी आचार्य व गुरु भी वैदिक ज्ञान के प्रबुद्ध विद्वान होते थे जिनके आचार्यत्व में विद्यार्थियों से नास्तिकता का नाश होकर एक सच्चे सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्ता ईश्वर की उपासना देश देशान्तर में प्रचलित थी। सभी स्त्री व पुरुष स्वाध्यायशील व योगाभ्यासी होते थे जिससे सभी स्वस्थ, सुखी, अपरिग्रही व सन्तोषी होते थे। समाज व देश में ऋषि—मुनियों की बड़ी संख्या होने से कहीं कोई अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न व प्रचलित नहीं होता था। शंका होने पर राजाओं के द्वारा बड़े—बड़े शास्त्रार्थों का आयोजन होता था और विजयी पक्ष के विचारों को समस्त देश को स्वीकार करना पड़ता था। धर्मनिरपेक्षता जैसा शब्द महाभारत काल तक व उसके बाद के साहित्य में कहीं नहीं पाया जाता। इस प्रकार सर्वत्र वैदिक धर्म का पालन होता था।

महाभारत काल के बाद मध्यकाल में अज्ञान व अन्धविश्वासों के उत्पन्न हो जाने से धर्म का सत्य स्वरूप विकृत हो गया जिससे समाज में अवतारवाद, मूर्तिपजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, पाखण्ड व आडम्बर, जन्मना जातिवाद आदि मिथ्या विश्वास उत्पन्न हो गये। महर्षि दयानन्द (1825—1883) तक इन मिथ्या विश्वासों में वृद्धि होती रही। स्वामी दयानन्द जी को सन् 1938 की शिवरात्रि को ईश्वर विषयक बोध प्राप्त हुआ। इसके कुछ काल बाद उनसे छोटी बहिन व चाचा की मृत्यु ने उनमें वैराग्य के संस्कारों को उत्पन्न किया। उन्होंने सत्य धर्म व संस्कृति की खोज के लिए सन् 1846 में माता—पिता व स्वगृह का त्याग कर देश भर के धार्मिक विद्वानों, शिक्षकों व योगियों को ढूंढ कर उनकी संगति व शिष्यत्व प्राप्त किया। मथुरा के प्रज्ञाचक्षु गुरू स्वामी विरजानंद सरस्वती के पास वह सन् 1860 में पहुंचे और उनसे तीन वर्षों में संस्कृत के आर्ष व्याकरण अष्टाध्यायी—महाभाष्य व निरुक्त संस्कृत—व्याकरण प्रणाली का ज्ञान प्राप्त कर समस्त वैदिक व इतर धार्मिक साहित्य के विद्वान बने। गुरु की प्रेरणा से उन्होंने संसार से मिथ्या ज्ञान नष्ट करने के साथ आर्ष ज्ञान व सत्य सनातन वैदिक मत एवं संस्कृति के प्रचार व स्थापना का कार्य किया। इस कार्य को सम्पादित करने के लिए ही उन्होंने देश का भ्रमण कर न केवल धर्मोपदेश व शास्त्रार्थ आदि ही किये अपितु आर्यसमाज की स्थापना सहित पंचमहायाविधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया और साथ हि चारों वेदों का संस्कृत व हिन्दी में भाष्य का अभूतपूर्व महनीय कार्य भी आरम्भ किया। वह यजुर्वेद का पूर्ण व ऋग्वेद का आंशिक भाष्य ही कर पाये। उनके इन कार्यों ने धर्म व संस्कृति के सुधार व उन्नति का अपूर्व कार्य किया। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ लिख कर व उसमें देश देशान्तर के प्रायः सभी मतों की समीक्षा कर वैदिक सनातन मत को वास्तविक व यथार्थ धर्म सिद्ध व घोषित किया। उनकी चुनौती उनके जीवनकाल व बाद में भी कोई स्वीकार नहीं कर सका जिस कारण से आज भी वेद धर्म सर्वोपरि महान व संसार के सभी लोगों के लिए आचरणीय बन गया है। महर्षि दयानन्द के समय व उनसे पूर्व ईसाई व इस्लाम के अनुयायी हिन्दुओं के धर्म—परिवर्तन का आन्दोलन चलाये हुए थे। बहुत बड़ी संख्या में उन्होंने सफलता भी प्राप्त की थी परन्तु स्वामी दयानन्द के कार्यों ने उनके धर्मान्तरण के कार्य पर प्रायः पूर्ण विराम लगा दिया। यदि हिन्दुओं ने ऋषि दयानन्द की वेद विषयक सत्य विचारधारा को अपना लिया होता तो आज देश का इतिहास कुछ नया व भिन्न होता। पतन को प्राप्त हो रहे वैदिक धर्म की रक्षा के लिए उनके द्वारा किया गया कार्य अपूर्व, ऐतिहासिक एवं महान है।

महर्षि दयानन्द ने स्वभाषा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह वेदों की संस्कृत को विश्व की सभी भाषाओं की जननी मानते थे और उन्होंने साधिकार संस्कृत भाषा व इसके साहित्य का प्रचार किया। इसके लिए उन्होंने वेदांग प्रकाश नाम से संस्कृत व्याकरण के अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं। गुजराती होते हुए भी उन्होंने गुजराती के प्रति कभी पक्षपात नहीं किया। वह प्रचार आरम्भ करने के समय से ही संस्कृत में व्याख्यान देते थे जो सरल सुबोध व मुहावरेदार होती थी जिसे संस्कृत न जानने वाले लोग भी समझ लेते थे। उनके वार्तालाप की भाषा भी यही भाषा थी। कालान्तर में उन्होंने हिन्दी भाषा को अपनाया और इसे आर्यभाषा का नाम दिया। बहुत कम समय में आपने हिन्दी सीख ली और हिन्दी में ही व्याख्यान, वार्तालाप व लेखन कार्य करने लगे। हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए आपने अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखे व प्रकाशित किये। आपने अपने ग्रन्थों का उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद करने की अनुमति इस कारण नहीं दी थी कि इससे हिन्दी के प्रचार व प्रसार पर विपरीत प्रभाव हो सकता था। इस सन्दर्भ में उन्होंने यहां तक कह दिया था कि जो व्यक्ति इस देश में उत्पन्न होकर और यहां का अन्न आदि खा कर यहां की सरल भाषा हिन्दी को नहीं सीख सकता उससे देश के हित के लिए और क्या आशा की जा सकती है? भारत के सरकारी दफ्तरों में कामकाज की भाषा तय करने के लिए अंग्रेजों ने जब एक कमीशन बनाया तो हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा स्वीकार कराने के लिए स्वामी दयानन्द जी ने देश भर में एक हस्ताक्षर अभियान चलाया और उस पर लाखों वा करोड़ो लोगों के हस्ताक्षर कराये। हस्ताक्षर अभियान चलाकर सरकार से अपनी बात स्वीकार कराने वाले शायद स्वामी दयानन्द भारत के प्रथम महापुरुष थे। ऐसा ही अभियान उन्होंने गोरक्षा अथवा गोहत्या बन्द कराने के लिए भी चलाया था। महर्षि दयानन्द के कार्यों से देश में हिन्दी भाषा का अपूर्व प्रचार हुआ जिसका प्रभाव उनके समकालीन व परवर्ती संस्कृत व हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा। इस विषय पर शोधार्थियों ने शोध प्रबन्ध भी प्रस्तुत किये हैं। स्वभाषा संस्कृत व हिन्दी के प्रचार व प्रसार में स्वामी दयानंद जी का सर्वाधिक योगदान है।

मनुष्यों की वेशभूषा भी किसी संस्कृति का एक आवश्यक अंग होती है। भारत में प्राचीनकाल से ही पुरुषों व स्त्रियों की वेश भूषा निर्धारित है। पुरुषों के लिए धोती, कुर्ता, लोई वा शाल सहित बन्द गले का कोट व जैकेट एवं सिर पर पगड़ी प्रचलित रही है। इसी प्रकार से स्त्रियों के लिए भी बचपन में फ्राक से आरम्भ कर किशोर, युवावस्था व उसके बाद शलवार, कुर्ता, चुन्नी वा दुपट्टा, साड़ी आदि का पहनावा प्रचलन में रहा है। भौगोलिक दूरियों के कारण इनमें कुछ न्यूनाधिक परिवर्तन आदि भी देखने को मिलता है जिसमें एक ही मूल भावना काम करती दिखाई देती है। वेशभूषा विषयक भारतीय चिन्तन फैशन न होकर शरीर की रक्षा व सभ्यता का सूचक होता है जिससे किसी के मन में किसी प्रकार विकार आदि उत्पन्न न हो। 8वीं शताब्दी से भारत में मुगलों का आना आरम्भ हुआ और उन्होंने अपने धर्म, भाषा व वेशभूषा आदि थोपने में कोई कसर नहीं रखी। उसके बाद अंग्रेज आये और देश को गुलाम बनाया। उन्होंने भी अपने ईसाई धर्म, अंग्रेजी भाषा व परम्पराओं का प्रचार व प्रसार किया। हमारे देश के लोग अंग्रेजों से कुछ अधिक ही प्रभावित हो गये और आज भी इनकी ही वेश भूषा का प्रचलन देश भर में देखने को मिलता है। भारतीय वेशभूषा का प्रचलन कम हो रहा है और विदेशी यूरोपीय वेशभूषा का प्रचलन बढ़ रहा है।

महर्षि दयानन्द ने भारतीय धर्म, संस्कृति के प्रति गौरव का भाव जगाया तो इसमें भारतीय वेशभूषा पर भी ध्यान केन्द्रित रखा। वह सदैव धोती का प्रयोग करते थे। भारतीय कुर्ते में भी उनके चित्र उपलब्ध है। सम्मान की निशानी सिर पर पगड़ी का भी वह प्रयोग करते थे और यदि ऊपर का उनका भाग वस्त्रहीन है, तो वह प्रायः शाल या लोई ओढ़ते थे। उनके जीवन में प्रसंग आता है कि एक बार उनकाएक अनुयायी अपने पुत्र को उनके पास लाया और उसके सुधार के लिए स्वामी जी को उस युवक उपदेश देने को कहा। स्वामी जी ने देखा कि उस युवक ने विदेशी वेशभूषा पैण्ट—शर्ट पहन रखी है। इसका उल्लेख कर उन्होंने उस बालक को अपने पूर्वजों की याद दिलाई और बताया कि उनकी वेशभूषा क्या व कैसी होती थी? यह भी बताया कि ज्ञान व चरित्र की दृष्टि से हमारे उन पूर्वजों की संसार में कोई समानता नहीं है। उनके विचारों का उस युवक पर प्रभाव पड़ा और उसने अपना सुधार किया। आज भी हम देखते हैं कि आर्यसमाज के अनुयायी अपने घरों में बच्चों, विशेष कर कन्याओं व स्त्रियों के भारतीय वेशभूषा के पक्षधर है और उनके परिवारों में इस दृष्टि से सख्त निर्देश हैं कि भारतीय वेशभूषा का ही प्रयोग हो। जहां तक अन्य सभी संस्थाओं से तुलना की बात है, आर्यसमाज पहले भी और आज भी भारतीय वेशभूषा का सबसे बड़ा समर्थक व पक्षधर है। आज भी हमारे युवक व युवतियों के गुरुकुलों व शिक्षण संस्थाओं में भारतीय वेशभूषा का ही प्रचलन व प्रभाव है।

किसी जाति व धर्म के मानने वाले लोगों की अपनी परम्परायें व रीति—रिवाज भी होते हैं जो कि उनकी संस्कृति का अंग कहलाते हैं। भारतीय धर्म व संस्कृति की बात करें तो यहां भी अनेकानेक परम्परायें व रीति—रिवाज प्रचलित हैं जिनके संशोधन व सुधार सहित अनावश्यक का त्याग तथा भूली हुई आवश्यक परम्पराओं का पुनः प्रचलन स्वामी दयानन्द जी व आर्यसमाज ने किया है। स्वामी दयानन्द ने समस्त वैदिक परम्पराओं को पंच महायज्ञों व 16 वैदिक संस्कारों में ढ़ालने सहित भारत में मनायें जाने वाले मुख्य पर्वों होली, दीपावली, शिवरात्रि आदि पर्वों को वैदिक विधि से मनाये जाने का शुभारम्भ किया। वैदिक परम्पराओं में प्रातः व सायं ईश्वरोपासना, दैनिक अग्निहोत्र, माता—पिता—आचार्य—वृद्धों आदि का सम्मान, पशु—पक्षी—कीट—पतंगों आदि को अन्न व भोजन कराना तथा अतिथियों का सत्कार करने सहित गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त 16 संस्कारों को प्रचलित किया। आर्यसमाज अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि का पक्षधर है और सभी मनुष्यों को वेदादि ग्रन्थों सहित सभी प्रकार के ज्ञान की पुस्तकों को नियमित रूप से पढ़ने व पढ़ाने को जीवन का अनिवार्य अंग मानता है। आर्यसमाज वेदादि सभी लाभकारी ग्रन्थों के नियमित स्वाध्याय का प्रबल समर्थक है। वैदिक संस्कृति में अच्छी परम्पराओं का प्रचलन व अनावश्यक एवं बुरी प्रथाओं के नियंत्रण का आर्यसमाज समर्थक है। इस क्षेत्र में आर्यसमाज ने बहुमूल्य योगदान दिया है। आर्यसमाज की प्रत्येक मान्यता व सिद्धान्त सत्य मान्यताओं व तर्कों पर आधारित हैं जिनसे समाज लाभान्वित होता है। इसी कारण सभी लोग अपनी अपनी ज्ञान की योग्यता के अनुसार इसे पसन्द करते व अपनाते हैं। यही कारण है कि आर्यसंमाज भारत तक ही सीमित न होकर एक विश्वव्यापी संगठन है।

मनुष्य का व्यवहार, व्यक्तिगत व सामाजिक नियम तथा विधि—विधान कैसें हों, इसके लिए आर्यसमाज वैदिक परम्पराओं व मनुस्मृति के वेदानुकूल व अप्रक्षिप्त सभी बुद्धिसंगत व देश समाजोपयोगी नियमों को स्वीकार करता है। स्वामी दयानन्द ने ऐसे अधिकांश नियमों का सत्यार्थप्रकाश सहित अपने ग्रन्थों में उल्लेख भी किया है। इसके अतिरिक्त स्वामी दयानन्द वैदिक धर्म के प्रतीक चोटी, यज्ञोपवीत व सिर पर पगड़ी धारण करने के भी समर्थक हैं। बहुत से लोग आर्यसमाज के एतदविषयक तर्कों से सहमत होने के कारण इनका अनुसरण करते हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा वैदिक धर्म के विश्वासों, नियमों, मान्यताओं व परम्पराओं को सत्य व असत्य की कसौटी पर कस कर निर्धारित किया गया है। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, पुनर्विवाह, विधवा विवाह व इतर कार्यों विषयक नियम, जन्मना जातिवाद, वर्णव्यवस्था, स्त्री शिक्षा आदि विश्वासों को भी सत्य व असत्य की कसौटी तथा न्याय एवं व्यवहारिकता पर कस कर निर्धारित किया गया है जिसका समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। अधिकांश शिक्षित लोग आर्यसमाज की विचारधारा से सहमत हैं। आर्यसमाज ही देश की पहली संस्था है जिसने अंग्रेजों के दमनकारी शासन में स्वदेश भक्ति को उदबुद्ध किया जिसका परिणाम भारत को सन् 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। शहीद पं. स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, रामप्रसाद बिस्मिल व शहीद भगतसिंह जी का परिवार स्वामी दयानन्द व आर्यसमाज के अनुयायी थे। आजादी के आन्दोलन में आर्यसमाज के अनुयायियों की संख्या सर्वाधिक थी ऐसा इतिहास में अंकित है।

स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज वैदिककाल में भारत में प्रचलित प्राचीन व विशुद्ध धर्म एवं संस्कृति के पोषक व पक्षधर थे और इसी को उन्होंने अपने घर्म व संस्कृति प्रचार के आन्दोलन में समाहित किया। इनका समाज पर व्यापक प्रभाव हुआ और आज के वैज्ञानिक युग में इसका भविष्य उज्जवल दृष्टिगोचर होता है। आर्यसमाज के पास संस्कृति से सम्बन्धित संसार की सबसे प्राचीन पुस्तकें चार वेद व महाभारतकाल व उससे पूर्व लिखे गये मनुस्मृति, 6 दर्शन, उपनिषदें, रामायण व महाभारत आदि ग्रन्थ हैं। यह ग्रन्थ न केवल भारतीय वैदिक धर्मियों के लिए ही मान्य हैं अपितु यह सारे संसार के मनुष्यों के धर्म व संस्कृति के आदि व आदर्श स्रोत हैं और सनातन सर्वकल्याणकारी शिक्षाओं के ग्रन्थ हैं। विश्व के सभी मनुष्यों को सभी पूर्वाग्रह छोड़कर वैदिक साहित्य का अध्ययन कर अपने मत—पन्थों की अविद्या से युक्त मान्यताओं व परम्पराओं को संशोधित व सुधार कर अपनाना चाहिये जिससे सर्वहितकारी सर्वमान्य धर्म व संस्कृति के क्षेत्र में एकरूपता आ सके।

—196 चुक्खूवाला—2, देहरादून—248001, फोनः 09412985121

पं.गुरुदत्त विद्यार्थी के 157 वे जन्मदिन पर किया स्मरण

महर्षि दयानंद के आदर्शों के प्रसारक थे प. गुरुदत्त विद्यार्थी –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार 26 अप्रैल 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में महान मनीषी, वैदिक विद्वान पं.गुरुदत्त विद्यार्थी के जन्मदिन पर उनके व्यक्तित्व व कर्तित्व को स्मरण कर ऑनलाइन जूम पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आपका जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुल्तान (अब पाकिस्तान) में हुआ था। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि प.गुरुदत्त विद्यार्थी महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य भक्त थे और स्वामी जी के 5 प्रमुख शिष्यों में गिने जाते थे। आप अपूर्व विद्वान, अदभुत वक्ता थे, वेदों पर आपकी अच्छी पकड़ थी। उन्हें हिंदी,उर्दू,अरबी फारसी भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय आपके सहसाथि रहे। उनकी पुस्तक द टर्मिनोलॉजी ऑफ वेदास को आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने पाठक्रम में सम्मिलित किया है। आज उनके जन्मदिन पर याद कर वेदों के प्रचार प्रसार का संकल्प लेना चाहिए।वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द शास्त्री ने कहा कि प.गुरुदत्त गम्भीर वक्ता थे उन्हें उपनिषदों का भी भरपूर ज्ञान था । केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि दीपावली के दिन 1883 को स्वामी दयानंद सरस्वती के निर्वाण के दृश्य को देखकर उनके सोचने की दिशा ही बदल गई। आचार्य महेंद्र भाई, आनन्द प्रकाश आर्य,कृष्ण कुमार यादव,सौरभ गुप्ता,वीना वोहरा, हरिचंद स्नेही,दीप्ति सपरा ने भी अपने विचार रखे। गायिका मर्दुल अग्रवाल, जनक अरोड़ा, प्रवीना ठक्कर,रवीन्द्र गुप्ता, पुष्पा चुघ,किरण सहगल, नरेंद्र सुमन, नरेश खन्ना आदि ने मधुर गीत भजन सुनाये। आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक प.ओमप्रकाश वर्मा(यमुनानगर), आर्य युवा कार्यकर्ता अजय सेठ,मनोहर लाल तलुजा के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया।

सुखमय जीवन के आधार पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

जीरो फिगर नहीं, जीरो फिकर करो –योगाचार्य श्रुति सेतिया

स्वतन्त्रता संग्राम में आजाद हिंद फौज का अहम योगदान–राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 18 अप्रैल 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'सुखमय जीवन के आधार' विषय पर ऑनलाइन जूम पर आर्य गोष्टी का आयोजन किया गया, साथ ही आजाद हिंद फौज के 75 वे स्थापना दिवस पर बधाई दी गई । कॅरोना काल में परिषद का यह 205 वा वेबिनार था। योगाचार्य श्रुति सेतिया ने कहा कि आज लोग जीरो फिगर बनाने में जुटे हैं, अपितु उन्हें चाहिए कि जीरो फिक्र करे,बहुत सारी समस्याएं स्वयं ही सुलझ जायेगी । उन्होंने कहा कि जीवन में सुख दु:ख, लाभ हानि,आशा निराशा, रुग्णता व स्वास्थ्य लाभ आते व जाते रहते है परन्तु हमे विचलित नहीं होना चाहिये व उनका सामना संघर्ष से करना चाहिए। चिंताओं से भागना नहीं अपितु बुद्धि व विवेक से मुकाबला करना चाहिए । योग सुखमय जीवन का आधार है इसे निरंतर अपनाना चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आज के ही दिन 18 अप्रैल 1942 को रासबिहारी बोस ने आजाद हिंद फौज की स्थापना की थी,बाद में उसका नेतृत्व नेताजी सुभाषचंद्र बोस को सौप दिया, देश की आजादी की लड़ाई में नेताजी सुभाष व आजाद हिंद फौज का सराहनीय योगदान रहा जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता । फौज के बलिदानी सैनिकों को आज हम नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करते है। आर्य नेता राजकुमार भंडारी व अध्यक्ष उर्मिला आर्या (अध्यक्ष, आर्य युवती परिषद) ने कहा कि बर्दाश्त करो और माफ करो तभी यह जीवन सही चल सकता है । वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी (आनन्द धाम,हरिद्वार) ने अपना आशीर्वाद दिया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि षजिस घर में एक दूजे की बात जाए मानी, उस घर में न आये कोई परेशानी के माध्यम से अपना संदेश दिया। गायिका संगीता आर्या गीत,पुष्पा चुघ,नरेंद्र आर्य सुमन,आशा आर्या,बिंदु मदान, प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता आदि ने गीत सुनाये। आचार्य महेन्द्र भाई, सौरभ गुप्ता, डॉ भारत वेदालंकार, डॉ सुषमा आर्या,डॉ रचना चावला,मधु बेदी आदि उपस्थित थे।

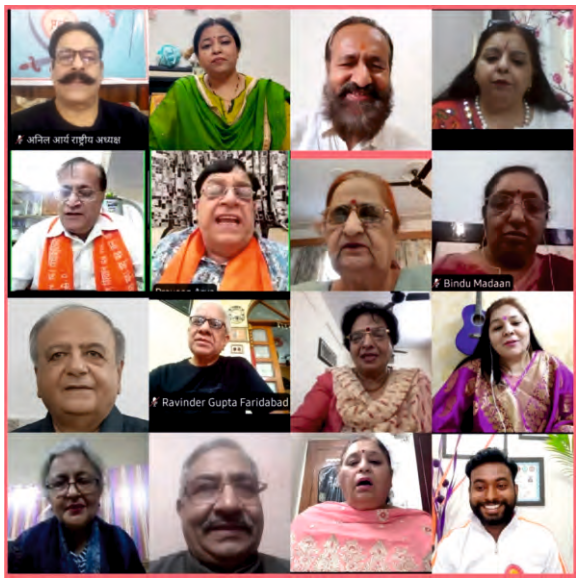

भारतीय तत्व मीमांसा वैदिक दर्शन के परिप्रेक्ष्य में गोष्ठी सम्पन्न

जीव,ईश्वर व प्रकृति सृष्टि का आधार है–डॉ. भारत वेदालंकार

वेद ज्ञान सबसे पुरातन व श्रेष्ठ –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 16 अप्रैल 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में भारतीय तत्व मीमांसा वैदिक दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विषय पर ऑनलाइन जूम पर आर्य गोष्टी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 204 वा वेबिनार था। वैदिक विद्वान डॉ. भारत वेदालंकार(गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) ने विवेचना करते हुए कहा कि जीव,ईश्वर व प्रकृति तीन अनादि स्वतंत्रत सताये है और सृष्टि का आधार है। एक तत्ववादी दो दर्शन मिलते हैं एक जड़वादी चार्वाक दर्शन। दूसरा एक तत्ववादी चेतनावादी आचार्य शंकर का अद्वैत वेदांत दर्शन है। जिसका वर्तमान समय में अज्ञानता के कारण अत्यधिक प्रचार–प्रसार हो रहा है। जोकि अव्यावहारिक सिद्धांत है यह संसार परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति माता के अभाव में संभव नहीं है दो तत्ववादी जीवात्मा और प्रकृति से भी संसार का व्यवहार नहीं चल सकता है। इसलिए वैदिक दर्शन का जो चिंतन तीन तत्वों का है यही वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण पर सत्य ठहरता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने इसी चिंतन को अपने ग्रंथों में वर्णित करते हुए स्पष्ट किया है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि वेद सृष्टि की सबसे पुरातन पुस्तक है व सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है। आर्य युवती परिषद की अध्यक्षा उर्मिला आर्या ने कहा कि महर्षि दयानंद जी ने वैदिक जीवन दर्शन को पुनर्जीवित किया। मुख्य अतिथि दिनेश आर्य(मंत्री,आर्य विद्या सभा शामली) व अध्यक्ष वेदपाल आर्य(सोनीपत) ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमे पाखण्ड अंधविश्वास से बचना चाहिए और सत्य सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करना चाहिए। प्रमुख रूप से आर्य नेता महेंद्र भाई, प्रवीन आर्य(महामंत्री, उत्तर प्रदेश),सौरभ गुप्ता, कमलेश हसीजा,चंद्र कांता आर्या,डॉ मनोज तंवर आदि उपस्थित थे। गायिका संगीता आर्या गीत,नरेंद्र आर्य सुमन,पुष्पा चुघ, बिंदु मदान, विजय हंस,रवीन्द्र गुप्ता, राजकुमार भंडारी आदि ने गीत प्रस्तुत किये।

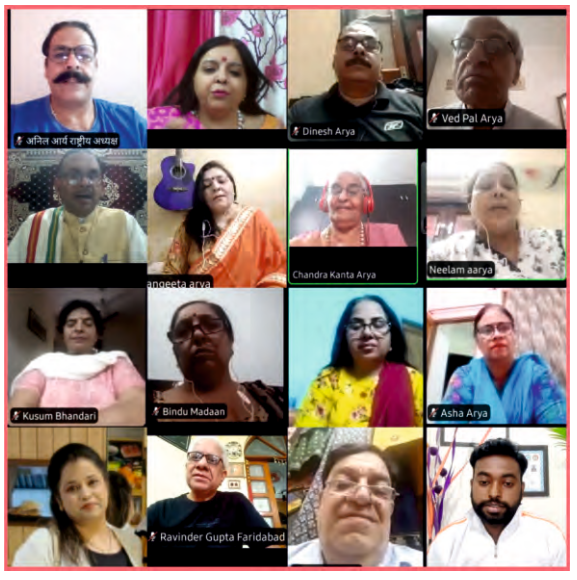

कॅरोना और योग पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

प्राणायाम से श्वसनतंत्र को मजबूत बनाये –योगगुरू ईश आर्य

शुक्रवार 30 अप्रैल 2021, केंद्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा ऑनलाइन आयोजित 211वे वेबिनार में सम्बोधित करते हुए पतंजलि योग समिति हरियाणा के प्रभारी ईश आर्य ने कहा कि करोना महामारी दौरान श्वसन तंत्र को मजबूत करने के लिए कुछ श्वसन क्रियाएं दैनिक दिनचर्या का अंग बनानी चाहिए। अगर हमारा श्वसन तंत्र मजबूत है तो कोई वायरस बैक्टीरिया इतनी आसानी से हमारे ऊपर हमला नहीं कर सकता अपने फेफड़ों को मजबूत करने के लिए कुछ प्राणायाम को अपनी जिन्दगी का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया प्रात दैनिक दिनचर्या से निवर्त हो प्रतिदिन जप घण्टा प्राणायाम व शारीरिक व्यायाम करें लंग्स मजबूती के लिए भस्त्रिका प्राणायाम लम्बे गहरे सांस नासिका से लेना और धीरे धीरे छोड़ना, कपाल भांति क्रिया प्राणायाम, बाहय् प्राणायाम, अनुलोम–विलोम, उज्जाई प्राणायाम, भ्रामरी उदगीत वह प्रणव ध्यान प्राणायाम को दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाने पर बल दिया यथा शक्ति शारीरिक व्यायाम जरुर करना चाहिए वर्तमान समय में घर पर बने खाने को खाएं व गिलोय का काढ़ा दिन में दो बार जरूर पीएं हरी सब्जियों को जरुर अपने भोजन में शामिल करले आंवला बेल मुरब्बा खाने का हिस्सा बनाने पर फोकस किया घर पर दैनिक यज्ञ जरुर करे हवन कुण्ड विश्व का पहला एयर सेनिटेशन के लिए होम जरुर करे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी रामदेव जी ने योग के क्षेत्र में विश्व क्रांति की है, उसका लाभ सभी को लेना चाहिए । आज योग प्राणायाम का इस समय और अधिक बढ़ गया है इसे दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाये, उन्होंने पत्रकार रोहित शर्मा के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए इसे पत्रकारिता जगत की हानि बताया। अध्यक्षता करते हुए आर्य नेता प्रदीप आर्य (अलवर) ने कहा कि आर्य समाज समाजसेवी संस्था है हमें इसके कार्य का और अधिक विस्तार करना चाहिए जिससे आम जनमानस जुड़ सके। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि यज्ञ से प्राणायाम शक्ति मजबूत होती हैं और वॉयरस नष्ट होता है।

सफलता के लिए युवा लीक से हटकर कार्य करे –आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

समय और अनुशासन का पालन आवश्यक है –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

वीरवार 29 अप्रैल 2021, केंद्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा 210 वां आर्य वेबीनार ऑनलाइन जूम पर आयोजित किया गया। विषय था सफलता के सूत्र। आर्य जगत के वैदिक विद्वान आचार्य गवेद्र शास्त्री ने अपने संबोधन में कहा कि महर्षि दयानंद जी के कई महान अनुयायी हुए जिन्होंने ऋषि ऋण को चुकाने के लिए अपने तन मन और धन तक को न्योछावर कर दिया था इन्हीं में से एक थे पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी ,उर्दू और फारसी के महान विद्वान थे आज की युवाओं पर इस बात की जिम्मेदारी है की वह लीक से हटकर सोचे और अपने जीवन में कुछ सकारात्मक परिणाम निकालें जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए मार्ग तो अनेक हैं लेकिन उन पर चलने की प्रेरणा हम अपने उन पूर्वजों से ले जिन्होंने अपने संचित ज्ञान का अधिकाधिक सदुपयोग किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि जीवन में सफलता के लिये समय की प्रतिबद्धता, अनुशासन बहुत आवश्यक है । जीवन मे कमिटमेंट्स होने चाहिए जिससे व्यक्ति लक्ष्य प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करता रहे । बिना लक्ष्य निर्धारित व्यक्ति अधूरा है जब मंजिल का ही पता नहीं होगा तो जायेगा कहाँ—?। अतः लक्ष्य निर्धारित व्यक्ति ही सफलता प्राप्त कर सकता है। अध्यक्षता करते हुए आर्य समाजसेवी हरिचंद स्नेही ने कहा कि जिस प्रकार बिना पता लिखा लिफाफा कही नहीं पहुचता उसी प्रकार युवाओं को कुछ मापदंड स्वय ही तय करके आगे बढ़ना है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि प. गुरुदत्त विद्यार्थी होनहार आर्य नोजवान थे हमे उनका अनुसरण करना चाहिए। आर्य केन्द्रीय सभा जिला गाजियाबाद के प्रधान सत्यवीर चौधरी ने कॅरोना से उपचार के लिए यज्ञ–हवन करने को कारगर ओषधि बताया। गायिका सुखवर्षा सरदाना, आशा आर्या, कविता आर्या, डॉ रचना चावला, विजय लक्ष्मी, कुसुम भंडारी,सुदेश आर्या,नरेंद्र सुमन, नरेश खन्ना, प्रवीना ठक्कर आदि ने गीत सुनाये। आचार्य महेन्द्रर भाई, सौरभ गुप्ता, कृष्ण लाल राणा,आनन्द प्रकाश आर्य,यशोवीर आर्य,मर्दुल अग्रवाल, राजकुमार भंडारी,जनक अरोड़ा, अनिल कक्कड़,संजय सपरा,रमा नागपाल, प्रेम सचदेवा आदि उपस्थित थे।

विद्रोही व राष्ट्रवादी कवि थे रामधारी सिंह दिनकर –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सत्ता व तंत्र का समन्वय आवश्यक है –डॉ. मनोज तंवर (गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार)

शनिवार 24 अप्रैल 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में कॅरोना काल में 208 वा वेबिनार ऑनलाइन जूम पर आयोजित किया गया । विषय था ष्सत्ता का तंत्र और संभावनाएंष् साथ ही राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर की 47 वी पुण्यतिथि पर उन्हें स्मरण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आजादी से पहले रामधारी सिंह दिनकर विद्रोही कवि और आजादी के बाद राष्ट्रवादी कवि कहलाये। वह देश भक्ति,ओज,वीर रस,विद्रोह, आक्रोश व क्रान्ति के कवि रहे । आपातकाल में उनकी रचना ष्सिंहासन खाली करो कि जनता आती हैष् ने तहलका मचा दिया। दिनकर कवि,लेखक, निबंधकार,विद्वान रहे और आपकी कविताओं ने स्वतंत्रता संग्राम में अग्नि का काम किया। आपका निधन 24 अप्रैल 1974 को चेनई में हुआ था। पद्मभूषण, साहित्य अकादमी सहित अनेको पुरस्कारों से सम्मानित हुए ऐसे स्वाभिमानी कवि का जीवन आज के लिए सबके लिए आदर्श है। मुख्य वक्ता डॉ. मनोज तंवर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार) ने कहा कि सत्ता और तंत्र दोनों भिन्न भिन्न स्थितियां हैं वहीं दोनों को साथ रखे बिना सामाजिक संगठन भी सम्भव नही ! सत्ता जहां मुख्यतया शक्ति को बांधने का प्रयास है वहीं तंत्र वो सिस्टम है जो शक्ति के बिखरे बुरे अणुओं को एक साथ रखने का प्रयास करता है ! वास्तव में सत्ता का मूल शक्ति के केन्द्रीयकरण और विकेन्सद्रीयकरण में निहित है! समाज पूर्णतया एक संश्लेषणात्मक प्रक्रिया है जिसका संश्लेषण स्वेच्छा से तब होता है जब प्रत्येक व्यक्ति एक सक्रिय इकाई हो जो कि सम्भव नही है और एक तंत्र के रूप में संश्लेषण तब होता है जब व्यक्तियों का गुट एक वर्ग अथवा कबिले का रुप लेता है । यहीं से राजनैतिक तंत्र की शुरुआत होती है जो समय पर राजतंत्र और लोकतंत्र जैसे तंत्रों के रुप में विकसित होता है । भविष्य में किसी अन्य तंत्र की संभावना तो नही है अपितु लोकतंत्र का ही एक ऐसा विकसित रूप प्रकट हो सकता है जिसमे समाज की सबसे छोटी इकाई एक मनुष्य भी दिन प्रतिदिन के निर्णयों में प्रत्यक्ष भागीदार होगा तथा जिसमे टेक्नोलॉजी मुख्य भूमिका निभाएगी। अध्यक्षता करते हुए प्रो.विश्राम वाचस्पति(प्रपौत्र स्वामी श्रद्धानंद जी व पूर्व फीचर संपादक, हिन्दुस्तान ने रामधारी सिंह दिनकर को नामन करते हुए क्रांतिकारी कवि बताया, उन्होंने कहा कि कोरोना–काल में जहां हर तरफ निराशा और दुख का माहौल है, वहां अनिल आर्य द्वारा लगातार संचालित किए जा रहे ऐसे आयोजन इम्युनिटी बूस्टर का काम कर रहे हैं। वहीं डॉ. मनोज तंवर द्वारा एक गंभीर और सामयिक विषय पर चर्चा से मानसिक खुराक हासिल हुई।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मा. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970